संगीत का आरम्भ (उत्पत्ति)

---

१. 'संगीत-मकरन्द' के रचयिता ने जहाँ संगीत की उत्पत्ति ब्रह्मा से मानी है, वहीं 'संगीत-रत्नाकर' के रचयिता आचार्य शाङ्र्गदेव ने इसकी उत्पत्ति भगवान शिव से मानी है। शाङ्र्गदेव ने संगीतोत्पत्ति से लेकर अपने युग के अनेक नामों का उल्लेख किया है, जिनसें सदाशिव, शिवा, नारद, ब्रह्मा, दुर्गा, अर्जुन, शक्ति, वायु, रम्भा आदि पौराणिक नामों के साथ भरत, कश्यप, मतंग, कोहल, दत्तिल, तुम्बुरू, रूद्रट नान्यदेव, भोजराज आदि ऐतिहासिक व्यक्तियों का भी नामोल्लेख किया है।

संगीत के संदर्भ में शिवपुराण के अनुसार महामुनि नारद ने अनेक वर्षों योग साधना की तब भगवान शंकर ने उन पर प्रसन्न होकर संगीतकला प्रदान की। माँ पार्वती की शयनमुद्रा को देखकर शिव ने अनेक अंग प्रत्यंगों के आधार पर 'वीणा' बनाई, अपने पंचमुखों से क्रमशः पूर्वमुख से भैरव, पश्चिम मुख से हिण्डोल, उत्तरमुख से मेघ, दक्षिणमुख से दीपक एवं आकाशोन्मुख मुख से रागश्री को प्रकट किया। माँ पार्वती द्वारा कौशिक राग की उत्पत्ति हुई। शिव प्रदोषस्त्रोत में लिखा है कि जगज्जननी पार्वती को स्वर्णासिंहासन पर उपनीत कराके प्रदोषकाल में भगवान शिव ने नृत्य करने की इच्छा प्रकट की। इस अवसर पर सभी देवता उपस्थित होकर भगवान शिव की स्तुति करने लगे। शिव के साथ सरस्वती ने वीणा, इन्द्र ने वेणु, ब्रह्मा ने करतालवादन, लक्ष्मी ने गायन एवं भगवान विष्णु ने मृदंगवादन कर इ स अलौकिक संगीत सभा को अविस्मरणीय बनाया।

२. फारसी की एक कथा के अनुसार एक बार हजरत सूसा नाव से सैर कर रहे थे। उन्हें एक पत्थर दिखाई दिया। अचानक वहाँ प्रकट हुए ब्राइल नामक फरिश्ते ने उस पत्थर को हमेशा अपने पास रखने की सलाह दी। कुछ दिनों पश्चात् हजरत मूसा जंगल की सैर कर रहे थे, उन्हें प्यास लगी, आसपास कही पानी नहीं था। वे चिन्तित होकर सुदा से प्रार्थना करने लगे। फलस्वरूप वर्षा हो गई, पानी की धार उस पत्थर पर पड़ने लगी। उस सात धाराओं से सात ध्वनियाँ निकली, जिन्हें हजरत मूसा ने आत्मसात् कर लिया। यही सात ध्वनियाँ संगीत के मुख्य सात स्वर मान्य हुए।

३. कुछ के मतानुसार कोहकाक में एक पक्षी है, जिसे फारसी में 'आतिशजन' कहते हैं। इस पक्षी के चोंच के सात छिद्रों से सात प्रकार के स्वर निकलते हैं, जिन्हें मुख्य सात स्वर मान लिया गया।

४. प्रसिद्ध संगीत विद्वान् एवं 'संगीत दर्पण' के रचयिता दामोदर पण्डित इन मुख्य सात स्वरों को क्रमशः मयुर से षड्ज, चातक से ऋषभ, बकरा से गान्धार, कोञ्च पक्षी से मध्यम, कोयल से पंचम, मेढ़क से धैवत और हाथी से निषाद स्वर की उत्पत्ति मानते हैं।

५. कुछ विद्वानों के मतानुसार संगीत की उत्पत्ति 'ओम' शब्द से हुई हैं। यह शब्द एकाक्षर होकर भी अ, उ, म्- धारक, रक्षक, पालक की स्थिति का प्रतीक यथा अ- उत्पत्ति- शक्ति द्योतक सृष्टिकर्त्ता ब्रह्मा, उ- धारक, पालक, रक्षण के शक्तिपुंज विष्णु और म- महेश शक्ति संहार का द्योतक हैं। इन तीन ध्वनियों से निर्मित शब्द 'ओम' तीनों शक्तियों का पुंज ही 'त्रिमूर्ति परमेश्वर' हैं। 'ओम' बेद का बीज मंत्र है। मनु का कहना है कि ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद से क्रमशः अ, उ, म, लेकर 'प्रणव ओम' बना है जो परमात्मा का अनुपम नाम है। सकल वेद तथा सम्पूर्ण तपस्या मं लक्ष्यरूप से जिस पद की इच्छआ करके मुमुक्षुगण ब्रह्मचर्य का अवलम्बन करते हैं, उस पद का संक्षिप्त नास 'ओम' है। प्राचीन महर्षियों ने सम्पूर्ण वेदाङ्ग- शिक्षाशासमत्र द्वारा यह भली भाँति सिद्ध कर दिया है कि 'प्रणव' में तीनों गुणों की शक्तियाँ- तीन पुंजीभूत है, इ सलिए यह हस्व, दीर्ध एवं प्लुत तीनों की सहायता बिना उच्चारित नहीं किया जा सकता। गान्धर्व उपवेद में षड्ज आदि सातों स्वर एकमात्र 'ओंकार' शब्द के ही अन्तर्विभाग हैं, जिस प्रकार बहिः सृष्टि

© Copyright IGNCA, Sunil Jha
All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

काशी/वाराणसी की संगीत परम्परा

में सात दिन, सात रंग, सात धातु आदि एवं अन्तर्राज्य में सप्तज्ञान भूमिका का विवेचन है, उसी प्रकार एकमात्र अद्वितीय शब्द 'ब्रह्मरूपी ओंकार' षड्ज आदि सप्त स्वर विभाग में विभक्त होकर नाना शब्द- राज्य की सृष्टि किया करता है, इसीलिए तंत्रों में इ से 'मंत्राणाम् प्रणवः सेतुः' कहा गया है। बिना 'ओंकार' के प्रयोग के मंत्र लक्ष्य के अनुसार काम करने में सक्षम नहीं हो सकता। फलतः एकमात्र 'प्रणव ओम्' ही शब्दमय साक्षात ब्रह्म हैं। शब्द और स्वर दोनों की उत्पत्ति 'ओम' से हुई हैं। प्रथमतः स्वर फिर शब्द निकले। मुख से उच्चारित 'प्रणव' अलौकिक प्रणवनाद का प्रतीक शब्द है, लेकिन यह मात्र लौकिक-सम्बन्ध में अविष्कृत नहीं हुआ है। तंत्रों में यह प्रतिपादित है, कि मुख से उच्चारित 'ओंकार' ध्वनि ही अपूर्व रीति से आधार-पद्य से उठकर सहस्त्रदल स्थित पुरूष में लय हुआ है।

वास्तव में 'ओम' शब्द ही संगीत के जन्म का साधन हैं। समस्तकलाएँ ओम् के विशालगर्भ से आविर्भूत हुई हैं। जो 'ओम' की साधना कर पाते हैं, वे ही संगीत का यथार्थ रूप समझ पाते हैं। इसमें लय, ताल, स्वर सभी कुछ हैं। ब्रह्म अखण्ड, अद्वैत होते हुए भी परब्रह्म शब्दब्रह्म, इन दो रूपों में काल्पित होता है। शब्दब्रह्म को जान लेने से परब्रह्म की प्राप्ति होती है। सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड नादमय हैं। नाद से वर्ण, वर्ण से शब्द, शब्द से वाक्य और वाक्य से भाषा उद्भूत होती है। भाषा से सृष्टि का व्यापार चलता है, अतः सम्पूर्ण सृष्टि ही नद के अधीन है-

'नादेन व्यज्यते वर्णः..... नादाधीनमतो जगत्।'

(संगीत-दर्पण, १/१४ ।।)

© Copyright IGNCA, Sunil Jha
All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.